बुद्धवर्ष २५५१, वैशाख पूर्णिमा, २ मई, २००७ वर्ष ३६ अंक ११

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

किं मे एकेन तिण्णेन, पुरिसेन थामदस्सिना।
सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा, सन्तारेस्सं सदेवकं॥
– बुद्धवंस - ५६

मेरे एक अकेले के तर जाने से क्या होगा? केवल इसी में अपना पुरुषार्थ क्या देखूं? मुझे तो सर्वज्ञता प्राप्त कर के अनेकानेक देव मनुष्यों के तरने में सहायक बनना है।

मार पराजित

सुजाता की खीर ग्रहण करने के बाद निरंजना नदी के समीप साल-वृक्षों की छाया में बोधिसत्व ने कुछ देर विश्राम किया और फिर ध्यान करने में समय बिताया। दिन ढलने के पहले उसने निरंजना नदी के तट पर जाकर स्नान किया और बोधिवृक्ष तक लौट कर, उसके नीचे पूर्वाभिमुख होकर पालथी मार कर फिर ध्यान करने बैठ गया।

बचपन में कपिलवस्तु के खेतों के समीप जामुन वृक्ष की छाया में बैठ कर जिस आनापान सति की साधना की थी, वही करने लगा। सहज, स्वाभाविक सांस के आगमन और निगमन और शरीर पर होने वाली संवेदनाओं के उदय-व्यय स्वभाव को भावनामयी प्रज्ञा के साथ सतत सजग रहने का अभ्यास करता रहा। ध्यान के लिए बैठते ही बोधिसत्व ने यह अधिष्ठान किया यानी प्रण किया कि जब तक मुझे सम्यक संबोधि उपलब्ध नहीं हो जाती, तब तक मैं इसी आसन में अडिग बैठा रहूंगा, आसन नहीं बदलूंगा, पालथी नहीं खोलूंगा चाहे मेरे शरीर के मांस, मज्जा और खून सारे सूख जायँ, चाहे शरीर की नस-नाड़ियां ही बची रहें, केवल हड्डियों का ढांचा ही बचा रहे, तब भी मैं इस अधिष्ठान से रंचमात्र भी विचलित नहीं होऊंगा।

यह देख कर मार ने उसे विचलित करने के अनेक प्रयत्न किये। मार मृत्युराज को कहते हैं। अधोलोक से अग्रलोक तक यानी अरूप ब्रह्मलोक तक मृत्युराज मार का साम्राज्य छाया हुआ है। प्राणी अधोलोक में हो, या मनुष्य अथवा देव या ब्रह्मलोक में हो, उसे देर-सबेर मृत्यु और पुनर्जन्म में-से गुजरते रहना पड़ता है। इस भवसंसरण के सारे क्षेत्र को मार अपना साम्राज्य मानता है। कोई व्यक्ति चाहे जिस प्रकार की साधना करके जब तक मानव, देव या ब्रह्मलोकों का भव-भ्रमण करता रहता है, तब तक वह प्रसन्न रहता है। परंतु जब इस भवसंसरण को पार करने का प्रयत्न करता है तब वह तिलमिला उठता है। बोधिसत्व यही करने बैठा है। आठों ध्यान करके ,वह उच्चतम अरूप ब्रह्मलोक तक ही पहुँच पाया था। इससे आगे लोकातीत अवस्था का साक्षात्कार नहीं कर पाया था। लेकिन अब जिस तपस्या का संकल्प लेकर अधिष्ठान के साथ बैठा है, यह उसे लोकोत्तर का साक्षात्कार करवा देगी। वह सदा के लिए भवसंसरण से मुक्त हो जायगा। उसके लिए यह जन्म अंतिम जन्म साबित होगा (**अयं अन्तिमा जाति**) और इसी प्रकार इस बार की मृत्यु उसकी अंतिम मृत्यु होगी। उसका पुनर्जन्म नहीं होगा- (**नत्थि दानि पुनब्भवोति**)। वह मेरे साम्राज्य क्षेत्र से बाहर निकल जायगा। यह मेरी बहुत बड़ी पराजय होगी। परंतु इससे भी बुरी बात यह होगी कि जिस विपश्यना विद्या के प्रभाव से वह स्वयं भवमुक्त होगा, उसे अनेकों को सिखा कर उनकी भी भवमुक्ति में सहायक बन जायगा। यह मेरी अधिक बुरी पराजय होगी। परंतु इसे तपस्या में सफलता तभी मिलेगी, जबकि यह अपने अधिष्ठान पर दृढ़ रहेगा। अतः इसके अधिष्ठान को भंग करना आवश्यक है। अत्यधिक भय और आतंक से ही यह विचलित हो सकेगा और अपना अधिष्ठान तोड़ कर तपस्या त्याग देगा। तभी मेरी विजय होगी, इसकी पराजय होगी।

इस योजना को सक्रिय रूप देने के लिए उसने मायावी रूप बना कर सहस्र भुजाओं में सहस्र प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण किये और गिरिमेखला नामक मायावी भयावह गजराज पर सवार होकर बोधिसत्व को पराजित करने के लिए आ पहुँचा। अपने साथ बहुत बड़ी संख्या में मायावी मार-सेना भी ले आया और बोधिसत्व को भयभीत करने के लिए अनेक मायावी उपक्रमों में लग गया।

उसके सैनिक अत्यंत भयंकर चेहरों से तथा सिर कटे धड़ों से बोधिसत्व को भयभीत करने का प्रयत्न करने लगे। लेकिन वह बोधिवृक्ष के तले पालथी मारे अविचलित होकर ध्यान करता रहा। मार के सैनिकों ने उस पर सुलगते हुए अंगारे फेंके। भयंकर उल्कापात किया। उस पर जलती हुई राख, कोयले, और तपती हुई बालू की वर्षा की। धधकती हुई लपटों से प्रहार किया। बोधिमंड के चारों ओर अग्नि की विकराल लपटें फैला दी। बड़ी-बड़ी चट्टानों से आक्रमण किया। असाधारण झंझावात और दिल दहला देने वाली डरावनी आवाजें पैदा की। प्रबल भूकंपन किया। प्रचंड आंधी, तूफान और चक्रवातों का सृजन किया। बोधिमंड के चारों ओर महासमुद्र की-सी उत्तुंग लहरें पैदा कर दी। परंतु बोधिसत्व अविचल ध्यानमग्न बैठा रहा। यह देख कर मार ने बोधिसत्व को स्वयं धमकी दी कि मैं तुझे चकनाचूर कर दूंगा। अपने अस्त्र-शस्त्रों से तुम्हारे शरीर की बोटी-बोटी काट दूंगा।

जब इसका भी कोई असर नहीं हुआ तब वह गरजता हुआ बोला कि जिस वज्रासन पर तुम बैठे हो, वह मेरा है। इस पर तेरा कोई अधिकार नहीं है। अडिग अडोल बैठे हुए तपस्वी बोधिसत्व ने कहा कि इस आसन पर उसी का अधिकार होता है जिसने सभी पारमिताएं पूरी कर ली हो। अतः इस पर मेरा अधिकार है, क्योंकि मैंने सभी पारमिताओं का संचय पूरा कर लिया है। उसने पृथ्वी की ओर संकेत करते हुए कहा कि यह पृथ्वी साक्षी है। इस पृथ्वी पर मैंने अनेक जन्मों में पारमिताएं पूरी की हैं। इस सत्यघोषणा से पृथ्वी पर एक सिहरन हुई, कंपन हुआ। मानो पृथ्वी ने इस सच्चाई की साक्षी दी। बोधिसत्व को भयभीत करने का बुरा संकल्प लेकर आया हुआ मार यह देख कर स्वयं भयभीत हो गया। वह तत्काल अपनी सेना के साथ वहां से पलायन कर गया।

मार की सारी करतूतें असफल रहीं। असंख्य जन्मों से एकत्र की गयी पुण्य-पारमिताओं का कवच बोधिसत्व की रक्षा करता रहा। कोई मायावी प्रहार उसे छू तक नहीं सका। उसका बाल भी बांका नहीं कर सका। बोधिसत्व नितांत निर्भय बना रहा। मार और उसकी सेना ने उसे भयभीत करने की जो कुचेष्टाएं की, उनसे बोधिसत्व के मन में जरा भी क्रोध नहीं जागा। असीम मैत्री और करुणा ही जागी। प्रतिक्षण समताभरी प्रज्ञा में प्रतिष्ठित बना रहा। अपराजित बोधिसत्व की जीत हुई। पापी मार पराजित हुआ।

बोधिमंड के वातावरण में देर तक इस दिव्य-घोष की गूंज बनी रही –

मारस्स च पापिमतो पराजयो...

दान आदि पारमिताओं के बल पर ही बोधिसत्व विजित हुआ। तभी कहा गया –

दानादि-धम्मविधिना जितवा मुनिन्दो...

मार-कन्याओं का निष्फल दुष्प्रयत्न

सम्यक संबोधि उपलब्ध होने के पश्चात सम्यक संबुद्ध ने पांचवा सप्ताह अजपाल वटवृक्ष के तले ध्यान में बिताया। यहां रहते हुए दुष्ट मार पुनः उनसे यह विवाद करने आया कि तुमने स्वयं भवमुक्त अवस्था प्राप्त कर ली है। अब यह मुक्तिदायिनी विपश्यना विद्या औरों को सिखाने का संकल्प क्यों कर रहे हो? जब मार सम्यक संबुद्ध को अपने इस कुशल चिंतन से नहीं डिगा सका तब इस दूसरी पराजय से अत्यंत संतापित होकर गहरी निराशा में डूब गया। वह दुःखी मन से एकांत में एक ओर अकेला जा बैठा।

उसकी तीन पुत्रियों – तृष्णा, अरती (द्वेष) और रगा (राग) ने अपने पिता की यह दशा देखी तो उसे आश्वासन देते हुए कहा कि जिस बोधिसत्व को तुम नहीं डिगा सके, उसे हम डिगायेंगी। यह दावा करके वे तीनों बोधिसत्व के समीप पहुँची। विभिन्न प्रकार से अपने अंग-प्रत्यंगों के प्रदर्शन द्वारा बोधिसत्व को आकर्षित करने का प्रयत्न करने लगीं। बोधिसत्व ध्यान की फल-समापत्ति में अचल बैठा रहा। उसने आंखें भी नहीं खोलीं। इन युवतियों ने भिन्न-भिन्न लुभावने रूप और आकृतियां धारण कर उसे रिझाना चाहा। उन्होंने तपस्वी से प्रार्थना भी की कि उन्हें सेवा का अवसर दिया जाय। लेकिन बोधिसत्व ध्यानमग्न ही रहा। उस पर इन कुचेष्टाओं का रंचमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। अंततः वे भी हार मान कर अपने पिता के पास लौट आयीं।

महामुनि बोधिसत्व का निश्चय अडोल रहा। उसका अधिष्ठान नहीं टूटा। आनापान की साधना के साथ-साथ सारे शरीर में उदय-व्यय के अनित्यबोध की अनुभूति करते हुए वह प्रज्ञा में पूर्णतया स्थित बना रहा। आगे जाकर अपने यहां शायद इसी का उल्लेख करते हुए कहा गया –

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते। यह महामुनि **स्थितधीः** यानी स्थितप्रज्ञ इसीलिए कहलाया, क्योंकि वह **वीतराग** हुआ। दिव्यांगनाएं मार-पुत्रियां उसमें **कामराग** नहीं जगा सकीं। विपश्यना के प्रज्ञाचक्षु द्वारा **कामराग** को पूर्णतया भस्मीभूत कर चुका था। प्रज्ञा द्वारा ही भय का मूलोच्छेदन कर **वीतभय** बन गया था। उस पर भयंकर आक्रमण करने वाली मारसेना पर उसने रंचमात्र भी क्रोध नहीं किया। क्रोध के सारे संस्कार प्रज्ञा द्वारा उच्छिन्न कर **वीतक्रोध** हो चुका था। उसका मानस महाकरुणा से भर गया था। ऐसा महामुनि ही सही मानेमें **स्थितधीः** यानी स्थितप्रज्ञ कहलाया। ....

चारों ओर प्रसन्नता का माहौल था। उदासी केवल देवपुत्र मृत्युराज मार के मुख पर छायी हुई थी। अब उसके बाड़े में विचरने वाले प्राणियों का बाड़ा-बंधन टूटेगा, अनेक लोगों पर उसकी सत्ता का प्रभाव कमजोर पड़ेगा। अनेक लोग मृत्यु के चंगुल से मुक्त होंगे।

भले मार दुखी हो, अनेकों का कल्याण होगा! मंगल होगा! स्वस्ति-मुक्ति होगी! हुआ ही!

बोधिसत्व को अंतिम जन्म देने वाली महाशाक्यराज संवत ६८ की यह वैशाख पूर्णिमा बहुतों के लिए धन्यता का कारण बनी। स्वयं भी धन्य-धन्य हुई। धन्य हुई महाशाक्यराज संवत ८३ की वैशाख पूर्णिमा जब बोधिसत्व मृत्यु के चंगुल से मुक्त हो गया।

यह वैशाख पूर्णिमा हमारे लिए भी कल्याण का कारण बने। हम भी इससे प्रेरणा पाएं और अपना मंगल साध लें!

मंगल मित्र,

स. ना. गो.

ग्लोबल पगोडा परिसर में 'धम्मपत्तन' विपश्यना केंद्र

आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि ग्लोबल पगोडा परिसर में 'धम्मपत्तन' नामक विपश्यना केंद्र का निर्माण हो रहा है। इस केंद्र का निर्माण केवल गंभीर साधकों के लिए हुआ है जिसमें सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई गयी हैं। ऐसे गंभीर साधक भगवान की शरीर धातु के समीप ध्यान करके अपने आपको भाग्यशाली एवं गौरवशाली अनुभव करेंगे।

बढ़ती उम्र और व्याधिग्रस्त शरीर के चलते पूज्य गुरुदेव के लिए लंबी दूरी की यात्रा करना अत्यंत कठिन हो गया है। नियमित रूप से डॉक्टरों व वैद्यों के निरीक्षण-परीक्षण में रहने के कारण वे इगतपुरी के केंद्र में निवास कर सकने में असमर्थ हैं। जबकि

धम्मपत्तन केंद्र मुंबई क्षेत्र में होने के कारण उनके लिए कुछ समय तक वहां रह सकना संभव है। आवश्यकता पड़ने पर वे किसी भी प्रकार के निरीक्षण-परीक्षण के लिए मुंबई शहर में आसानी से पहुँच सकते हैं अथवा चिकित्सक वहां आ सकते हैं।

यह सुविधा भविष्य में उन्हें ९०-दिवसीय शिविर संचालन कर सकने के लिए एक स्वर्णावसर जैसी है। फिलहाल यहां दस दिवसीय तथा कुछ दीर्घ शिविर लगेंगे। इसके लिए उन्होंने यह भी निर्देश दिया है कि ग्लोबल पगोडा के दक्षिणी छोर पर निर्माणाधीन दूसरे लघु पगोडा का उपयोग विशेष रूप से ऐसे गंभीर शिविरों के लिए ही किया जाय। नया विपश्यना केंद्र इससे जुड़ा हुआ है। इसमें १०० ध्यान गुफाएं (शून्यागार) होंगी। इस प्रकार प्रत्येक शिविरार्थी को एकाकी निवास और एकाकी शून्यगार उपलब्ध हो सकेगा। फिर भी धम्मपत्तन इस बात को ध्यान में रखेगा कि **" ग्लोबल विपश्यना पगोडा "** एक जीवंत प्रकाशस्तंभ के रूप में बना रहे। उसके समीप पावन धर्मतरंगों की छाया में साधक विशेष रूप से लाभान्वित होते रहे।

इस निर्माण योजना को सफल बनाने के लिए सभी विपश्यी पुण्यार्जन के भागीदार बन सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क –

पता – यदि आप **"ग्लोबल विपश्यना पगोडा"** को अनुदान देना चाहते हैं तो कृपया--ट्रेजरर, **ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन, अकाउंट नं. ११२४४, बैंक ऑफ इंडिया, स्टाक एक्सचेंज शाखा,** द्वारा- खीमजी कुंवरजी एंड कंपनी, ५२, बॉम्बे म्यूच्युअल बिल्डिंग, सर पी. एम. रोड, मुंबई-४००००१. (फोन: ९१-२२- २२६६ २५५०, फैक्स: २२६६४०४५), **ई-मेलः** kamlesh@khimjikunverji.com के पास डाक से निम्न प्रकार से फॉर्म भर कर भेज सकते हैं।

(कृपया नकद दें। चेक और ड्राफ्ट मुंबई में देय होना चाहिए।)

नाम: .....

चेक क्र .:..... **रु.** .....

पता:.....

.....

.....

फोन:.....

डिमांड ड्राफ्ट नं.: ..... **रु.** .....

ई-मेल:.....

हस्ताक्षर:.....

विदर्भ क्षेत्र (महाराष्ट्र) में तीन नए केंद्रों का निर्माण

१. **धम्म अनाकुल.** अकोला से लगभग ४० कि.मी. की दूरी पर तेल्हारा नामक गांव में ६ एकड़ के भूखंड पर इस केंद्र का निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है। कुछ आवश्यक अस्थायी निर्माण करके यहां पर शिविर लगाने का कार्य भी आरंभ हो गया है। केंद्र संचालन का काम स्थानीय विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में हो रहा है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क –**'विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट'**, शेगांव, अपना बाजार, मेन रोड, शेगांव- ४४४२०३, जिला- बुलढाना, महाराष्ट्र. फोन- ०७२७९-२५३४५६. श्री मोहनलाल अग्रवाल, मो. ९८८१२०४१२५.

२. **धम्म अजय.** चंद्रपुर से लगभग २४ कि.मी. की दूरी पर अजयपुर गांव के समीप ८.५ एकड़ के भूखंड पर सयातैजी चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में साधना-कक्ष (धम्म हॉल) का निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क –**'सयातैजी चैरिटेबल ट्रस्ट'**, द्वारा श्री मिलिंद घरडे, सुगत नगर, नगीना वार्ड नं.-२, चंद्रपुर-४४२४०१. फोन- ०७१७२- २६२४७७, मो. -९२२६१३७७२२.

३. **धम्म मल्ल.** यह यवतमाल से १२ कि.मी. की दूरी पर ६.५ एकड़ के पर्वतीय भूखंड निर्मित हो रहा है। तदनुसार इसका नक्शा आदि बनाया जा रहा है और शीघ्र ही निर्माण कार्य आरंभ होगा। अधिक जानकारी के लिए संपर्क –**'विपश्यना समिति',** यवतमाल, द्वारा- श्री एन. सी. शेळके, सिद्धार्थ सोसायटी, यवतमाल- ४४५००१. फोन- ९४२२८६५६६१.

विशेष सूचना

पूज्य गुरुजी को किसी प्रकार का कोई शिकायती पत्र लिखना हो तो साधक अपना पूरा नाम-पता अवश्य लिखें। उनका पत्र गोपनीय रखा जायगा और उस पर जांच-पड़ताल भी होगी। परंतु बिना नाम-पता का भेजा गया पत्र, पूज्य गुरुजी पढ़ते भी नहीं।

धन्यवाद!

विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण

समाचार पत्र का नाम : **"विपश्यना"**
भाषा : **हिंदी**
प्रकाशन का नियत काल **मासिक** (प्रत्येक पूर्णिमा)
प्रकाशन का स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक का नाम : राम प्रताप यादव
राष्ट्रीयता : भारतीय
मुद्रण का स्थान : अक्षरचित्र, बी-६९, सातपुर, नाशिक-७.
पत्रिका के मालिक का नाम : **विपश्यना विशोधन विन्यास,**
(रजि. मुख्य कार्यालय):
ग्रीन हाऊस, २ रा माला,
ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

मैं, राम प्रताप यादव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राम प्रताप यादव,
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
दि. २०-४-२००७.

महत्त्वपूर्ण सूचनाः (जिसने मासिक पत्रिका का शुल्क जमा नहीं किया है केवल उसी के लिए)

भावी शिविर-कार्यक्रमों की जानकारी और दैनिक साधना में प्रगति के लिए प्रेरणास्रोत **'विपश्यना'** पत्रिका सभी नये साधकों को कुछ समय तक विशेष सुविधा के रूप में प्रेषित की जाती है। यदि आप चाहते हों कि यह आप को एक वर्ष तक नियमित मिलती रहे तो कृपया इस भाग को काटकर पीछे चिपकाए पते सहित हमें लौटती डाक से वापस भिजवाएं। आप की ओर से कोई उत्तर न आने पर 'विपश्यना' के प्रति आप की अरुचि मानकर पत्रिका भेजना बंद कर देंगे। परंतु यदि आप 'विपश्यना' के प्रति रुचि रखते हैं और किसी कारणवश शुल्क नहीं भेज सकते हों तब भी हम पत्रिका भेजते रहेंगे। आप चाहें तो आवश्यक शुल्क भेज कर इसके आजीवन या वार्षिक सदस्य बन सकते हैं। अतः कृपया निम्न अनुकूल बाक्स पर ✓ लगाकर सूचित करें– ☐ रुचि है। ☐ रुचि नहीं है। ☐ आजीवन या वार्षिक सदस्य बनना चाहते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री अनिल एवं श्रीमती सुनीता धर्मदर्शी, गांधीनगर-- *धम्मपीठ, अहमदाबाद तथा धम्मदिवाकर, मेहसाना की सेवा*

३. श्री इंद्रवदन कोठडिया, गांधीनगर *धम्मपीठ, अहमदाबाद की सेवा*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री दीपक पगारे, मनमाड *धम्म मनमोद, मनमाड की सेवा*

२. श्री मोहनलाल अग्रवाल, आकोट

३. श्री रति राम सूर्य, गाजियाबाद

४. श्री राम निवास गौतम, दिल्ली

5. Mr. David Ferry & Mrs. Catharine Salter, *Australia*

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

1-2. Mr. Heinz Bartsch & Mrs. Brunhilde Becker, *Germany To serve Dhamma Dvāra, Germany and Dhamma Sobhana, Sweden*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्रीमती भारती फुलझेले, नागपुर

2. Mr. Pemasiri Amarasinghe, *Sri Lanka*

3. Mrs. Malini Kumarapperuma, *Sri Lanka*

4. Mrs. Priyangani Wijeratne, *Sri Lanka*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री मौलिक भूपतानी, अहमदाबाद

दोहे धर्म के

केवल निज निर्वाणहित, करे नहीं पुरुषार्थ।
सफल होय श्रम, जब सधे, स्वार्थ और परमार्थ॥

मैत्री करुणा प्यार से, हृदय तरंगित होय।
जन जन का हित-सुख सधे, तो निज हित-सुख होय॥

कल्पों तक भवभ्रमण कर, करे पारमी पूर्ण।
जगे बोधि, प्रज्ञा जगे, जगे ज्ञान संपूर्ण॥

भव भव भटकत सत्व का, जब भव अंतिम होय।
अपना भी मंगल सधे, बहुजन मंगल होय॥

अंतिम भव धीमान का, जिस धरती पर होय।
वह धरती पावन बने, जन जन पूजित होय॥

जिस जननी की कोख से, रत्न होय उत्पन्न।
सफल मनोरथ हो स्वयं, होवे लोक प्रसन्न॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धन्य हुवै जननी जनक, धन्य हुवै कुल गोत।
बोधिसत्व जनमै जठै, लियां धरम री जोत॥

धन्य धन्य धरती हुवै, पावन हुवै प्रदेस।
प्रगटै बुद्धांकुर जठै, लियां पुण्य निस्सेस॥

जीं जननी की कोख स्यूं, जनमै संत सुजान।
बा जननी पावन परम, धरम रतन की खान॥

जीं कुल जनमै सतपुरुस, लियां बोधि को ग्यान।
बीं कुल मँह मंगल जगै, हुवै अमित कल्याण॥

जणै जणै रो धरम स्यूं, मंगल हुवै मिलाप।
जनम जनम का दुख कटै, कट जावै सै पाप॥

सुद्ध धरम को जगत मँह, फैलै सुभ आलोक।
जन जन मन प्रग्या जगै, जन जन हुवै असोक॥

"वास्तुनिर्णय"

४१८, मित्तल चेंबर्स, जंगलीमहाराज रोड,
पुणे - ४११००५; फोनः (०२०) २५५३६६५६
Email: pareshgujarathi@yahoo.com
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५१, वैशाख पूर्णिमा, २ मई, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** १९१५६/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org